



शिक्षक प्रभावशीलता एवं कक्षा-शिक्षण अवलोकन: पुरस्कृत एवं गैर-पुरस्कृत

परिषदीय शिक्षकों का तुलनात्मक अध्ययन

अज़ीज़ुर्रहमान

शोधार्थी, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर एवं (प्रवक्ता-शिक्षा शास्त्र) जिला शिक्षा एवं

प्रशिक्षण संस्थान नरवल कानपुर नगर

Email- azeezurrahman786@gmail.com

डॉ. सुनीलिमा

सहायक प्रोफेसर, बी.एड. विभाग, श्री नारायण गर्ल्स (पी-जी) कॉलेज, उन्नाव

Email: sunilimaanand@gmail.com

संगीता गौतम

प्रवक्ता- समाज कार्य, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान नवल कानपुर नगर

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य कानपुर मण्डल के परिषदीय विद्यालयों में कार्यरत सरकार द्वारा पुरस्कृत एवं गैर-पुरस्कृत शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता तथा कक्षा-शिक्षण अवलोकन की तुलना करना है। अध्ययन में इन शिक्षकों की कक्षाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का भी विश्लेषण किया गया है। कानपुर मण्डल के छह जनपदों से स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा 50 शिक्षकों (25 पुरस्कृत एवं 25 गैर-पुरस्कृत) का चयन किया गया। शिक्षक प्रभावशीलता मापनी (पी. कुमार एवं डी.एन. मुथा), स्वनिर्मित कक्षा-शिक्षण अवलोकन अनुसूची तथा विद्यार्थियों की वार्षिक परीक्षा परिणामों का उपयोग उपकरण के रूप में किया गया। परिणामों के विश्लेषण हेतु टी-अनुपात का प्रयोग किया गया। निष्कर्षों से ज्ञात होता है कि पुरस्कृत शिक्षक शिक्षक प्रभावशीलता एवं कक्षा-शिक्षण अवलोकन में गैर-पुरस्कृत शिक्षकों की तुलना में सार्थक रूप से अधिक प्रभावी हैं। तथापि, दोनों समूहों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक



अंतर नहीं पाया गया। अध्ययन शिक्षक मूल्यांकन, पुरस्कार चयन प्रक्रिया तथा प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता संवर्धन हेतु महत्वपूर्ण निहितार्थ प्रस्तुत करता है।

Keywords: शिक्षक प्रभावशीलता, कक्षा-शिक्षण अवलोकन, शैक्षिक उपलब्धि, पुरस्कृत शिक्षक, गैर-पुरस्कृत शिक्षक, परिषदीय विद्यालय

प्रस्तावना

शिक्षा मानव जीवन का एक सुसंस्कृत एवं महत्वपूर्ण पक्ष है। शिक्षा के द्वारा ही संसार की आर्थिक, सामाजिक, वैज्ञानिक, आध्यात्मिक व सांस्कृतिक प्रगति होती है। शिक्षकों का महत्व बताते हुए एच.जी. वेल्स ने कहा है कि "शिक्षक इतिहास का वास्तविक निर्माता है" (त्यागी, 2003, पृ. 306)। कोठारी आयोग (1964-66) ने अपने प्रतिवेदन में लिखा था कि "राष्ट्र का भविष्य उनकी कक्षाओं में निर्मित होता है, अध्यापक ही राष्ट्र के सर्वोत्तम महत्वपूर्ण पदार्थ का निर्माण करता है" (सारस्वत, 2004, पृ. 14)।

शिक्षक प्रभावशीलता विद्यार्थी की शारीरिक, बौद्धिक और मनोवैज्ञानिक रुचियों के बीच मेलन और अंतःक्रिया बनाने की क्षमता है। गुड (1959) ने शिक्षण प्रभावशीलता को शिक्षक द्वारा अपने अनुबंध में निर्दिष्ट और अपने पद की प्रकृति द्वारा अपेक्षित शिक्षण और अन्य कार्यों को करने में सफलता की डिग्री के रूप में देखा (शर्मा, 2007, पृ. 67)। रयान्स (1951, 1960, 1963) ने व्यक्त किया कि एक प्रभावी शिक्षक वह समझा जा सकता है जो छात्रों की बुनियादी कौशल समझ, उचित कार्य आदतों, वांछनीय दृष्टिकोण और पर्याप्त व्यक्तिगत समायोजन के विकास में मदद करता है (गुप्ता, 2010, पृ. 78)।

कक्षा-शिक्षण अवलोकन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें किसी शिक्षक के द्वारा कक्षा में किए जा रहे शिक्षण कार्य का सीधा और वास्तविक अवलोकन किया जाता है, बिना किसी पूर्व नियोजन या पूर्व सूचना के। इसी अवलोकनकर्ता शिक्षक के कक्षा व्यवहार, शिक्षण विधियों, छात्रों की सहभागिता, शिक्षण सामग्री के प्रयोग, समय प्रबंधन तथा कक्षा अनुशासन जैसे अनेक पहलुओं का निरीक्षण करता है (शर्मा, 2006, पृ. 32)।

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा उत्कृष्ट शिक्षकों को राज्य अध्यापक पुरस्कार एवं राष्ट्रीय अध्यापक पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं। सामान्यतः यह माना जाता है कि पुरस्कृत शिक्षकों में उच्च स्तर की प्रभावशीलता होती है तथा वे श्रेष्ठ कक्षा-शिक्षण प्रदर्शन करते हैं। किन्तु परिषदीय विद्यालयों के संदर्भ में यह प्रश्न अनुत्तरित है कि क्या



पुरस्कृत शिक्षक वास्तव में गैर-पुरस्कृत शिक्षकों से भिन्न हैं? प्रस्तुत अध्ययन इसी शोध अंतराल को भरने का प्रयास करता है।

संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण

शानावाज (2007) ने कर्नाटक के डीपीईपी और गैर-डीपीईपी जिलों के प्राथमिक विद्यालय शिक्षकों की दक्षताओं, दृष्टिकोण और प्रदर्शन का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि गैर-डीपीईपी शिक्षक, डीपीईपी के शिक्षकों की तुलना में शिक्षण दक्षताओं में बेहतर पाए गए (शानावाज, 2007)।

चौधरी और कात्रे (2009) ने शिक्षक प्रशिक्षुओं की विशिष्ट शिक्षण दक्षताओं से निर्मित अवधारणा प्राप्ति की प्रभावशीलता पर अध्ययन किया। निष्कर्ष में पाया गया कि दोनों समूह मॉडल के अपने ज्ञान में समान पाए गए (चौधरी एवं कात्रे, 2009)।

शर्मा (2006) ने माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षकों की कक्षा अवलोकन पर कार्यशैली का अध्ययन किया। निष्कर्ष में पाया गया कि अधिकांश शिक्षक मुख्यतः व्याख्यान आधारित पद्धति अपनाते हैं जिससे शिक्षार्थी सहभागिता अपेक्षाकृत सीमित रहती है (शर्मा, 2006, पृ. 32)।

श्रीवास्तव (2013) ने सरकारी विद्यालयों में कक्षा-अवलोकन की भूमिका का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि अधिकांश शिक्षक अवलोकन-आधारित आत्ममूल्यांकन को उपयोगी मानते हैं, जिससे शिक्षण सुधार में मदद मिली (श्रीवास्तव, 2013, पृ. 84)।

ठाकुर (2015) ने कक्षा-अवलोकन और छात्र उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन किया। अध्ययन का प्रमुख निष्कर्ष यह रहा कि एक सकारात्मक सहसंबंध ($r = 0.68$) पाया गया, जिससे यह सिद्ध होता है कि नियमित अवलोकन शिक्षण परिणामों पर सकारात्मक प्रभाव डालता है (ठाकुर, 2015, पृ. 91)।

मीणा (2022) ने माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि महिला शिक्षकों का मध्यमान पुरुष शिक्षकों की तुलना में अधिक है (मीणा, 2022, पृ. 851)।

हेटी (2009) ने कक्षा अवलोकन तथा विद्यार्थियों की उपलब्धियों के बीच प्रभाव का अध्ययन किया। मेटा-विश्लेषण के निष्कर्ष में अवलोकन पर आधारित प्रत्यक्ष फीडबैक के प्रभाव आकार में उच्चतम मान पाए गए



(हेटी, 2009, पृ. 102)। साहित्य सर्वेक्षण से स्पष्ट होता है कि शिक्षक प्रभावशीलता, कक्षा-शिक्षण अवलोकन तथा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर देश-विदेश में अनेक शोध कार्य किए गए हैं। तथापि, परिषदीय विद्यालयों में पुरस्कृत एवं गैर-पुरस्कृत शिक्षकों की तुलनात्मक समीक्षा पर पर्याप्त शोध उपलब्ध नहीं है। प्रस्तुत अध्ययन इसी शोध अंतराल को भरने का प्रयास करता है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्यों का निर्धारण किया गया:

1. सरकार द्वारा पुरस्कृत परिषदीय शिक्षकों एवं गैर-पुरस्कृत परिषदीय शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. सरकार द्वारा पुरस्कृत परिषदीय शिक्षकों एवं गैर-पुरस्कृत परिषदीय शिक्षकों की कक्षा-शिक्षण अवलोकन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. सरकार द्वारा पुरस्कृत परिषदीय शिक्षकों एवं गैर-पुरस्कृत परिषदीय शिक्षकों की कक्षाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. सरकार द्वारा पुरस्कृत परिषदीय पुरुष शिक्षकों एवं गैर-पुरस्कृत परिषदीय पुरुष शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. सरकार द्वारा पुरस्कृत परिषदीय महिला शिक्षकों एवं गैर-पुरस्कृत परिषदीय महिला शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया:

1. सरकार द्वारा पुरस्कृत परिषदीय शिक्षकों एवं गैर-पुरस्कृत परिषदीय शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. सरकार द्वारा पुरस्कृत परिषदीय शिक्षकों एवं गैर-पुरस्कृत परिषदीय शिक्षकों की कक्षा-शिक्षण अवलोकन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।



3. सरकार द्वारा पुरस्कृत परिषदीय शिक्षकों एवं गैर-पुरस्कृत परिषदीय शिक्षकों की कक्षाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
4. सरकार द्वारा पुरस्कृत परिषदीय पुरुष शिक्षकों एवं गैर-पुरस्कृत परिषदीय पुरुष शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
5. सरकार द्वारा पुरस्कृत परिषदीय महिला शिक्षकों एवं गैर-पुरस्कृत परिषदीय महिला शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया, जिसमें कानपुर मण्डल के छह जनपदों (कानपुर नगर, कानपुर देहात, कन्नौज, फरुखाबाद, डटावा और औरिया) के परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत सरकार द्वारा पुरस्कृत तथा गैर-पुरस्कृत शिक्षकों को स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा चयनित किया गया, जिसमें कुल 50 शिक्षकों (25 पुरस्कृत एवं 25 गैर-पुरस्कृत) का चयन किया गया, पुरस्कृत समूह में 10 पुरुष एवं 15 महिला तथा गैर-पुरस्कृत समूह में भी 10 पुरुष एवं 15 महिला शिक्षक सम्मिलित थे, तथा चयनित शिक्षकों की कक्षाओं में अध्ययनरत सभी विद्यार्थियों को शैक्षिक उपलब्धि मापन हेतु सम्मिलित किया गया (पाण्डेय, 2024, पृ. 15); आँकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि, मध्यमानों के अंतर की मानक त्रुटि तथा टी-अनुपात का प्रयोग किया गया।

प्रयुक्त उपकरण:

1. **शिक्षक प्रभावशीलता मापनी** – पी. कुमार एवं डी.एन. मुथा द्वारा निर्मित मानकीकृत मापनी, जिसमें 69 कथन 11 आयामों में सम्मिलित हैं। मापनी की विश्वसनीयता अर्द्ध-विच्छेद विधि द्वारा 0.67 एवं पुनःपरीक्षण विधि द्वारा 0.75 पाई गई (कुमार एवं मुथा, 2007)।
2. **कक्षा-शिक्षण अवलोकन अनुसूची** – शोधकर्ता द्वारा निर्मित, 20 कथनों वाली अनुसूची, जिसे 40 विषय-विशेषज्ञों द्वारा वैधीकृत किया गया।
अर्द्ध-विच्छेद विधि द्वारा विश्वसनीयता गुणांक 0.53 प्राप्त हुआ।
3. **शैक्षिक उपलब्धि** – विद्यार्थियों की वार्षिक परीक्षा परिणामों के आधार पर मापन किया गया।



परिणाम एवं व्याख्या

प्रस्तुत अध्ययन में संकलित आँकड़ों का विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि तथा टी-अनुपात के माध्यम से किया गया, जिससे पुरस्कृत एवं गैर-पुरस्कृत परिषदीय शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता, कक्षा-शिक्षण अवलोकन तथा उनके विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में विद्यमान अंतरों का वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन संभव हो सका। विश्लेषण का उद्देश्य यह निर्धारित करना था कि क्या सरकार द्वारा पुरस्कृत शिक्षक वास्तव में गैर-पुरस्कृत शिक्षकों से भिन्न हैं, अथवा दोनों समूहों का प्रदर्शन समान स्तर का है। इसी क्रम में पाँच प्रमुख उद्देश्यों के अनुरूप शून्य परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया, जिनके परिणाम निम्नलिखित तालिका में प्रस्तुत हैं।

तालिका 1: पुरस्कृत एवं गैर-पुरस्कृत परिषदीय शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता, कक्षा-शिक्षण अवलोकन एवं विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक विश्लेषण

क्र.	उद्देश्य	समूह	N	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	टी-मान	सार्थकता (0.05 स्तर)	परिकल्पना का परिणाम
1	पुरस्कृत vs गैर-पुरस्कृत शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता	पुरस्कृत	25	328.70	17.22	6.75	3.79	सार्थक	H ₀ अस्वीकृत
		गैर-पुरस्कृत	25	303.10	29.05				
2	पुरस्कृत vs गैर-पुरस्कृत शिक्षकों की कक्षा-शिक्षण अवलोकन	पुरस्कृत	25	83.40	9.98	3.54	6.66	सार्थक	H ₀ अस्वीकृत
		गैर-पुरस्कृत	25	59.80	14.66				



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open access journal

Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

3	पुरस्कृत vs गैर-पुरस्कृत शिक्षकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि	पुरस्कृत	25	64.61	9.80	2.95	0.43	असार्थक	H ₀ स्वीकृत
		गैर-पुरस्कृत	25	65.88	11.07				
4	पुरस्कृत vs गैर-पुरस्कृत पुरुष शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता	पुरस्कृत पुरुष	10	328.00	12.11	10.64	2.57	सार्थक	H ₀ अस्वीकृत
		गैर-पुरस्कृत पुरुष	10	300.60	31.43				
5	पुरस्कृत vs गैर-पुरस्कृत महिला शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता	पुरस्कृत महिला	15	329.40	20.04	8.89	2.67	सार्थक	H ₀ अस्वीकृत
		गैर-पुरस्कृत महिला	15	305.60	28.30				

उद्देश्य 1: शिक्षक प्रभावशीलता

तालिका 1 से स्पष्ट है कि प्राप्त t-मान 3.79 है, df = 48 पर, जो 0.05 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना "सरकार द्वारा पुरस्कृत परिषदीय शिक्षकों एवं गैर-पुरस्कृत परिषदीय शिक्षकों की शिक्षक



प्रभावशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं है" **अस्वीकृत** की जाती है। इसके अतिरिक्त, पुरस्कृत शिक्षकों का शिक्षक प्रभावशीलता मध्यमान ($M = 328.70$) गैर-पुरस्कृत शिक्षकों ($M = 303.10$) से अधिक है।

अतः प्रस्तुत न्यादर्श में पुरस्कृत शिक्षकों ने गैर-पुरस्कृत शिक्षकों की तुलना में सार्थक रूप से उच्च शिक्षक प्रभावशीलता प्राप्त की। प्रस्तुत अध्ययन शानावाज (2007) के अध्ययन के अनुरूप है, जिन्होंने पाया था कि प्रशिक्षित शिक्षकों की दक्षताएँ अधिक होती हैं, जबकि चौधरी एवं कात्रे (2009) ने अपने न्यादर्श में शिक्षक प्रशिक्षुओं के ज्ञान में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया था।

उद्देश्य 2: कक्षा-शिक्षण अवलोकन

तालिका 1 से स्पष्ट है कि प्राप्त t -मान 6.66 है, $df = 48$ पर, जो 0.05 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना "सरकार द्वारा पुरस्कृत परिषदीय शिक्षकों एवं गैर-पुरस्कृत परिषदीय शिक्षकों की कक्षा-शिक्षण अवलोकन में कोई सार्थक अंतर नहीं है" **अस्वीकृत** की जाती है। इसके अतिरिक्त, पुरस्कृत शिक्षकों का कक्षा-शिक्षण अवलोकन मध्यमान ($M = 83.40$) गैर-पुरस्कृत शिक्षकों ($M = 59.80$) से अधिक है।

अतः प्रस्तुत न्यादर्श में पुरस्कृत शिक्षकों ने गैर-पुरस्कृत शिक्षकों की तुलना में सार्थक रूप से उच्च कक्षा-शिक्षण अवलोकन अंक प्राप्त किए। यह इस अध्ययन का सबसे प्रबल निष्कर्ष है। प्रस्तुत अध्ययन ठाकुर (2015) के अध्ययन से समर्थित है, जिन्होंने कक्षा-अवलोकन और शिक्षण परिणामों में सकारात्मक सहसंबंध ($r = 0.68$) पाया था, तथा हेटी (2009) के मेटा-विश्लेषण के अनुरूप है, जिसमें अवलोकन-आधारित प्रत्यक्ष फीडबैक का प्रभाव आकार उच्चतम पाया गया था।

उद्देश्य 3: विद्यार्थी शैक्षिक उपलब्धि

तालिका 1 से स्पष्ट है कि प्राप्त t -मान 0.43 है, $df = 48$ पर, जो 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना "सरकार द्वारा पुरस्कृत परिषदीय शिक्षकों एवं गैर-पुरस्कृत परिषदीय शिक्षकों की कक्षाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है" **स्वीकृत** की जाती है। इसके अतिरिक्त, पुरस्कृत शिक्षकों के विद्यार्थियों का शैक्षिक उपलब्धि मध्यमान ($M = 64.61$) गैर-पुरस्कृत शिक्षकों के विद्यार्थियों ($M = 65.88$) से कम है, यद्यपि यह अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्वहीन है।



अतः प्रस्तुत न्यादर्श में पुरस्कृत एवं गैर-पुरस्कृत शिक्षकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। यह निष्कर्ष हेटी (2009) के अध्ययन से आंशिक रूप से भिन्न है, जिन्होंने अवलोकन-आधारित फीडबैक का उच्च प्रभाव आकार पाया था, परन्तु वह प्रभाव शिक्षक व्यवहार पर था, सीधे विद्यार्थी अंकों पर नहीं। शानावाज (2007) ने दक्षताओं में अंतर पाया था, परन्तु उन्होंने विद्यार्थी उपलब्धि को सीधे नहीं मापा था।

उद्देश्य 4: पुरुष शिक्षक प्रभावशीलता

तालिका 1 से स्पष्ट है कि प्राप्त t -मान 2.57 है, $df = 18$ पर, जो 0.05 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना "सरकार द्वारा पुरस्कृत परिषदीय पुरुष शिक्षकों एवं गैर-पुरस्कृत परिषदीय पुरुष शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं है" **अस्वीकृत** की जाती है। इसके अतिरिक्त, पुरस्कृत पुरुष शिक्षकों का शिक्षक प्रभावशीलता मध्यमान ($M = 328.00$) गैर-पुरस्कृत पुरुष शिक्षकों ($M = 300.60$) से अधिक है।

अतः प्रस्तुत न्यादर्श में पुरस्कृत पुरुष शिक्षकों ने गैर-पुरस्कृत पुरुष शिक्षकों की तुलना में सार्थक रूप से उच्च शिक्षक प्रभावशीलता प्राप्त की। यह निष्कर्ष मीणा (2022) के अध्ययन का पूरक है, जिन्होंने महिला शिक्षकों का मध्यमान पुरुष शिक्षकों से अधिक पाया था, प्रस्तुत अध्ययन पुरुषों की तुलना पुरुषों से करके दिखाता है कि पुरस्कार का प्रभाव लिंग-निरपेक्ष है।

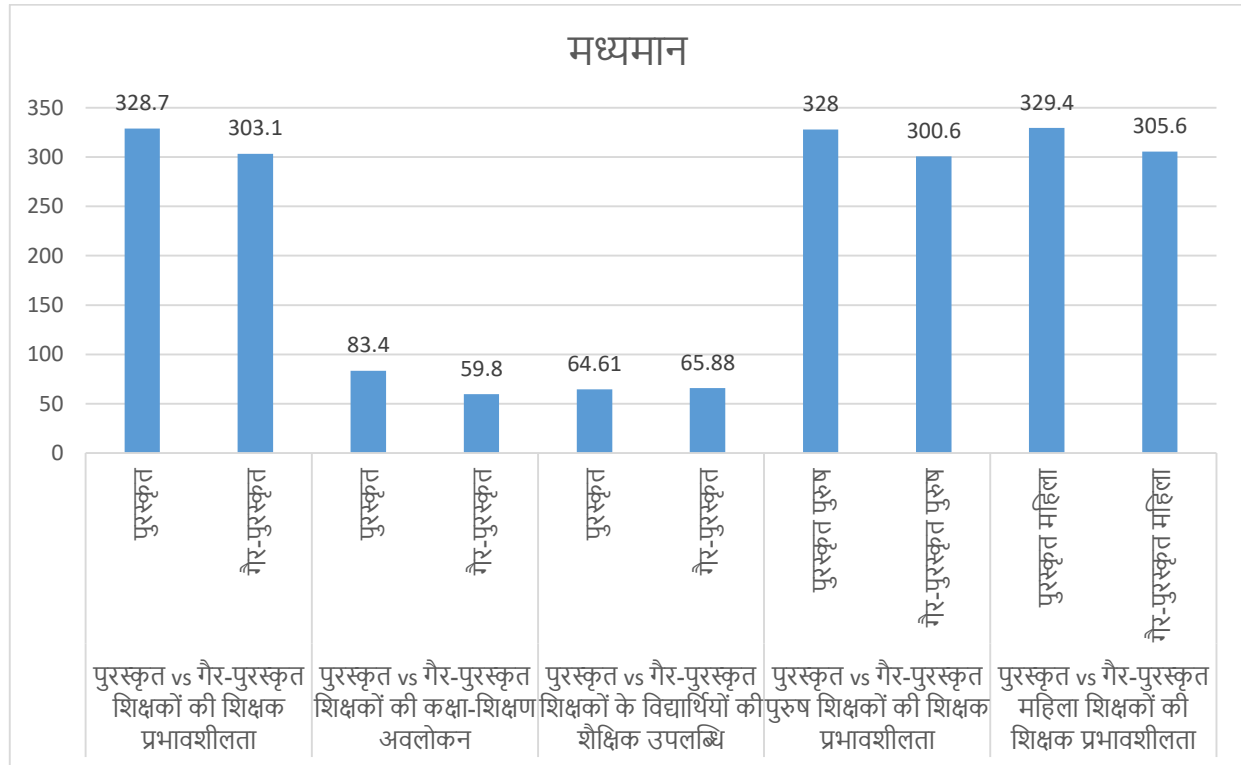
उद्देश्य 5: महिला शिक्षक प्रभावशीलता

तालिका 1 से स्पष्ट है कि प्राप्त t -मान 2.67 है, $df = 28$ पर, जो 0.05 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना "सरकार द्वारा पुरस्कृत परिषदीय महिला शिक्षकों एवं गैर-पुरस्कृत परिषदीय महिला शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं है" **अस्वीकृत** की जाती है। इसके अतिरिक्त, पुरस्कृत महिला शिक्षकों का शिक्षक प्रभावशीलता मध्यमान ($M = 329.40$) गैर-पुरस्कृत महिला शिक्षकों ($M = 305.60$) से अधिक है।

अतः प्रस्तुत न्यादर्श में पुरस्कृत महिला शिक्षकों ने गैर-पुरस्कृत महिला शिक्षकों की तुलना में सार्थक रूप से उच्च शिक्षक प्रभावशीलता प्राप्त की। यह निष्कर्ष मीणा (2022) के अध्ययन की दिशा में है, जिन्होंने



महिला शिक्षकों का मध्यमान अधिक पाया था, प्रस्तुत अध्ययन में पुरस्कृत महिलाओं का मध्यमान (329.40) पुरस्कृत पुरुषों (328.00) से थोड़ा ही अधिक है, यानी प्रवृत्ति कायम है पर अंतर बहुत कम।



चित्र 1: पुरस्कृत एवं गैर-पुरस्कृत परिषदीय शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता, कक्षा-शिक्षण अवलोकन एवं विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों का तुलनात्मक प्रदर्शन

प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सरकार द्वारा पुरस्कृत शिक्षक शिक्षक प्रभावशीलता ($t = 3.79$, $df = 48$) एवं कक्षा-शिक्षण अवलोकन ($t = 6.66$, $df = 48$) में गैर-पुरस्कृत शिक्षकों की तुलना में सार्थक रूप से अधिक प्रभावी हैं। यह प्रवृत्ति पुरुष शिक्षकों ($t = 2.57$, $df = 18$) एवं महिला शिक्षकों ($t = 2.67$, $df = 28$) दोनों में समान रूप से देखी गई, जो यह दर्शाता है कि पुरस्कार का प्रभाव लिंग-निरपेक्ष है। तथापि, विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में दोनों समूहों के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया ($t = 0.43$, $df = 48$)। यह निष्कर्ष यह संकेत देता है कि शिक्षक प्रभावशीलता और कक्षा-शिक्षण गुणवत्ता के अतिरिक्त अन्य कारक भी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करते हैं, जिनमें पाठ्यक्रम, मूल्यांकन प्रणाली, पारिवारिक पृष्ठभूमि, विद्यालयी वातावरण आदि सम्मिलित हैं। अतः विद्यार्थियों की उपलब्धि सुधारने के लिए केवल



शिक्षक प्रभावशीलता पर ध्यान केंद्रित करना पर्याप्त नहीं है, बल्कि समग्र शैक्षिक प्रणाली में सुधार आवश्यक है।

शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत शोध के निष्कर्षों से अनेक महत्वपूर्ण शैक्षिक निहितार्थ उभरकर सामने आते हैं:

तालिका 2: प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्षों पर आधारित शैक्षिक निहितार्थ

क्र.	निहितार्थ	मुख्य सुझाव	आधार / संदर्भ
1	शिक्षक चयन एवं मूल्यांकन	शिक्षक चयन, प्रशिक्षण एवं मूल्यांकन प्रक्रियाओं में शिक्षक प्रभावशीलता को प्रमुख मानदंड के रूप में अपनाया जाना चाहिए।	प्रस्तुत अध्ययन (तालिका 1, 4, 5, सार्थक अंतर)
2	कक्षा-शिक्षण अवलोकन	विद्यालयों में नियमित एवं संरचित कक्षा-शिक्षण अवलोकन की व्यवस्था होनी चाहिए, ताकि शिक्षकों को रचनात्मक प्रतिपुष्टि मिले और उनके शिक्षण कौशल में निरंतर सुधार हो।	श्रीवास्तव (2013); प्रस्तुत अध्ययन (तालिका 2, $t = 6.66$)
3	पुरस्कार प्रणाली	शिक्षक-प्रोत्साहन योजनाओं को और अधिक पारदर्शी, निष्पक्ष एवं व्यापक बनाया जाना चाहिए, ताकि अधिक से अधिक शिक्षक उत्कृष्ट कार्य के लिए प्रेरित हों।	प्रस्तुत अध्ययन (तालिका 1, 4, 5)
4	सेवाकालीन प्रशिक्षण	सेवाकालीन प्रशिक्षण, कार्यशालाएँ, सहकर्मि अधिगम तथा मार्गदर्शन कार्यक्रमों के माध्यम से सभी शिक्षकों की क्षमताओं का संवर्धन किया जाना आवश्यक है।	शानावाज (2007); प्रस्तुत अध्ययन
5	नीति निर्माण	राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए शिक्षक गुणवत्ता, शिक्षक प्रभावशीलता तथा	निगम (2021); प्रस्तुत अध्ययन (तालिका 3,



		कक्षा-शिक्षण की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है।	विद्यार्थी उपलब्धि में असार्थक अंतर)
--	--	---	--------------------------------------

भावी शोध हेतु सुझाव

1. भविष्य में इस अध्ययन के क्षेत्रफल को उत्तर प्रदेश के अन्य मण्डलों अथवा विभिन्न राज्यों के परिषदीय विद्यालयों तक विस्तारित किया जा सकता है।
2. भावी शोध में शिक्षक प्रभावशीलता के साथ-साथ शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि, कार्य-संतोष, व्यावसायिक प्रतिबद्धता, नवाचार प्रवृत्ति एवं डिजिटल दक्षता जैसे मनोवैज्ञानिक एवं व्यावसायिक चर भी सम्मिलित किए जा सकते हैं।
3. कक्षा-शिक्षण अवलोकन के अध्ययन को और अधिक वैज्ञानिक एवं वस्तुनिष्ठ बनाने हेतु भविष्य में दीर्घकालिक अवलोकन, वीडियो आधारित शिक्षण विश्लेषण, बहु-अवलोकक पद्धति तथा प्रामाणिक अवलोकन अनुसूचियों का प्रयोग किया जा सकता है (सोलंकी, 2023)।
4. भावी अनुसंधान में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को केवल परीक्षा अंकों तक सीमित न रखकर उनकी संज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक उपलब्धियों, अधिगम रुचि, आत्म-प्रेरणा, कक्षा सहभागिता तथा आलोचनात्मक चिंतन क्षमता जैसे पक्षों को भी सम्मिलित किया जा सकता है।
5. भविष्य के अध्ययनों में गुणात्मक शोध विधियों जैसे-साक्षात्कार, केस-अध्ययन, फोकस समूह चर्चा एवं शिक्षकों की आत्मकथात्मक अभिव्यक्तियों का उपयोग कर यह जानने का प्रयास किया जा सकता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सरकार द्वारा पुरस्कृत शिक्षक शिक्षक प्रभावशीलता एवं कक्षा-शिक्षण अवलोकन में गैर-पुरस्कृत शिक्षकों की तुलना में सार्थक रूप से अधिक प्रभावी हैं। तथापि, विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में दोनों समूहों के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। यह निष्कर्ष यह संकेत देता है कि शिक्षक प्रभावशीलता और कक्षा-शिक्षण गुणवत्ता के अतिरिक्त अन्य कारक भी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करते हैं, जिनमें पाठ्यक्रम, मूल्यांकन प्रणाली, पारिवारिक पृष्ठभूमि, विद्यालयी



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open access journal

Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com **ISSN: 2250 3552**

वातावरण आदि सम्मिलित हैं। अतः विद्यार्थियों की उपलब्धि सुधारने के लिए केवल शिक्षक प्रभावशीलता पर ध्यान केंद्रित करना पर्याप्त नहीं है, बल्कि समग्र शैक्षिक प्रणाली में सुधार आवश्यक है।

वित्तीय सहायता: इस शोध हेतु किसी भी संस्था से वित्तीय सहायता प्राप्त नहीं हुई।

हितों का टकराव: लेखक घोषित करता है कि इस शोध-पत्र के प्रकाशन से संबंधित कोई हितों का टकराव नहीं है।

नैतिक अनुमति: शोध कार्य नैतिक मानकों के अनुरूप किया गया; संबंधित विद्यालयों से अनुमति तथा शिक्षकों से सूचित सहमति प्राप्त की गई।

आभार: लेखक अपने शोध निर्देशक, विद्यालय प्रधानाध्यापकों, शिक्षकों, विद्यार्थियों, सहकर्मियों एवं परिवारजनों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता है, जिनके सहयोग के बिना यह अध्ययन पूर्ण नहीं हो सकता था।

संदर्भ

चौधरी, के., & कात्रे, एस. ए. (2009). शिक्षक प्रशिक्षुओं की विशिष्ट शिक्षण दक्षताओं से निर्मित अवधारणा प्राप्ति की प्रभावशीलता पर एक अध्ययन। *Review of Educational Research*.

गुप्ता, ए. (2010). *अधिगम परिणाम और शिक्षा का प्रभाव*. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग.

हैटी, जे. (2009). *Visible learning*. Routledge.

कुमार, पी., & मुथा, डी. एन. (2007). *शिक्षक प्रभावशीलता मापनी*. नेशनल साइकोलॉजिकल कॉर्पोरेशन.

मीणा, एल. के. (2022). *An International Journal of Research and Studies*, 27(5), 851–860.

निगम, डी. (2021). *Teacher roles and achievements under NEP 2020*. RIE Ajmer Publications.

पाण्डेय, एच. (2024). Continuous professional development and teacher performance: A new perspective. *Indian Educational Journal*, 12(1), 15–27.

सारस्वत, म. (2004). *शिक्षा सिद्धान्त*. विनोद पुस्तक मन्दिर.



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open access journal

Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com **ISSN: 2250 3552**

शानावाज, एस. (2007). *A study of competencies, attitudes and performance of primary school teachers in DPEP and non-DPEP districts of Karnataka* [Unpublished doctoral dissertation]. University of Mysore.

शर्मा, ए. (2006). *Classroom observation of secondary school teachers*. काशी विद्यापीठ.

शर्मा, वी. के. (2007). *शैक्षिक मनोविज्ञान के सिद्धांत*. प्रकाश बुक्स.

सोलंकी, ए. (2023). *Digital tools for classroom observation*. मुंबई विश्वविद्यालय.

श्रीवास्तव, एस. (2013). *Role of observation in government schools*. एनसीईआरटी.

ठाकुर, पी. (2015). *Correlation between observation and achievement*. पंजाब विश्वविद्यालय.

त्यागी, जी. डी. (2003). *भारतीय शिक्षा का परिदृश्य*. विनोद पुस्तक मन्दिर.